Bhudhape Me Yaade Khuda Wa Mustafa (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 366
Weekly Booklet : 366

बुढ़ापे में
यादे ख़ुदा

(सफ़हात 20)

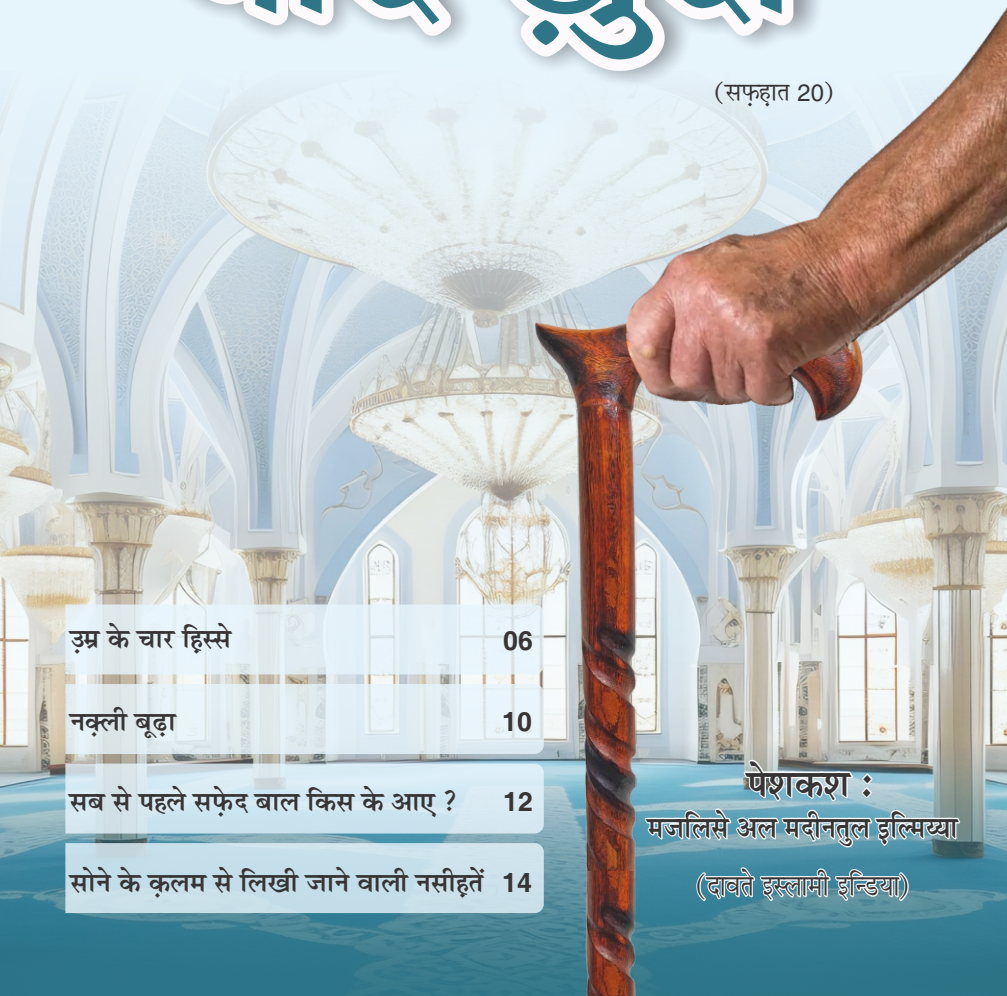

उ़म्र के चार ह़िस्से 06

नक़्ली बूढ़ा 10

सब से पहले सफ़ेद बाल किस के आए ? 12

सोने के क़लम से लिखी जाने वाली नसीह़तें 14

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **बुढ़ापे में यादे ख़ुदा**

सिने त़बाअ़त : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र **1446** हि., अगस्त **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**बुढ़ापे में यादे ख़ुदा**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

बुढ़ापे में यादे ख़ुदा

दुआए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला : **"बुढ़ापे में यादे ख़ुदा"** पढ़ या सुन ले उसे अपनी उ़म्र के हर हिस्से : लड़क पन, जवानी और बुढ़ापे में अपनी इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उसे मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श दे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

फ़िरिश्तों की इमामत (दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत)

ह़ज़रते ह़फ़्स बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है कि मैं ने इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते अबू ज़ुरआ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा कि वोह पहले आस्मान पर फ़िरिश्तों को नमाज़ पढ़ा रहे हैं। मैं ने पूछा : ऐ अबू ज़ुरआ़ ! आप को येह ए'ज़ाज़ो इक्राम कैसे मिला है ? उन्हों ने इर्शाद फ़माया : "मैं ने अपने हाथ से दस (10) लाख ह़दीसें लिखी हैं और मैं हर ह़दीस में दुरूदे पाक पढ़ा करता था और नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जो मुसल्मान एक मरतबा मुझ पर दुरूद शरीफ़ भेजता है तो **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है ।"

(شرح الصدور، ص294)

क़ब्र में ख़ूब काम आती है बे कसों की है यारे ग़ार दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 125)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तन्हाई में रहने वाले बुज़ुर्ग

अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इयास बिन क़तादा رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ अपनी क़ौम के सरदार थे। एक दिन आप ने आईने में अपनी दाढ़ी में एक सफ़ेद बाल देखा तो दुआ़ की : “**या अल्लाह** पाक ! मैं अचानक होने वाले ह़ादिसात से तेरी पनाह चाहता हूं, मुझे मा’लूम है कि मौत मेरा पीछा कर रही है और मैं इस से बच नहीं सकता।” फिर वोह अपनी क़ौम के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाने लगे : “ऐ बनू सा’द ! मैं ने अपनी जवानी तुम पर वक़्फ़ कर दी थी अब तुम मेरा बुढ़ापा मुझे बख़्श दो (या’नी जवानी में मैं ने तुम्हारे मुआ़मलात सर अन्जाम दिये मगर अब बुढ़ापे में मुझे **अल्लाह** पाक की इ़बादत कर लेने दो)।” फिर आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ अपने घर तशरीफ़ लाए और इ़बादत में मसरूफ़ हो गए यहां तक कि आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ हो गया। (بحر الدموع، ص112) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

गोशो पा दौशो ख़िरद होश में है   करना है जो कर ले आज ही

चन्द सबक़ आमोज़ अ़रबी अश्आ़र का तरजमा सुनिये !

﴾1﴿ ऐ बूढ़े शख़्स ! क्या बुढ़ापा आने के बा वुजूद भी तू जहालत (या’नी मौत को भुला कर धोके) में मुब्तला है ? अब (इस उ़म्र) में तेरी त़रफ़ से जहालत का मुज़ाहरा बिल्कुल अच्छा नहीं।

﴾2﴿ तेरा फ़ैसला तो सर के बालों की सफ़ेदी ने कर दिया मगर फिर भी तू दुन्या की त़रफ़ माइल होता है और ना पाएदार (दुन्या) तुझे धोका दे रही है।

﴾3﴿ फ़ना हो जाने वाली दुन्या पर अफ़्सोस करना छोड़ दे, क्यूं कि एक दिन तू भी मरने वाला है और ऐसे पक्के इरादे के साथ आगे बढ़ (या'नी इ़बादत कर) जिस में किसी बेहूदा पन की मिलावट न हो।

﴾4﴿ मैं ने ख़ुद को इ़बादत से रोक कर हलाकत इख़्तियार की है और अपनी पीठ को भारी गुनाहों से बोझल कर लिया है और ना फ़रमानी कर के गोया मैं ने अपने रब को चेलेन्ज कर दिया जब कि वोह इन्आ़मो एह़सान व जूदो करम वाला है। मैं उस की पकड़ से डरने के साथ साथ उस के अ़फ़्वो दर गुज़र की उम्मीद भी रखता हूं और मैं इस बात का पक्का यक़ीन रखता हूं कि वोह ही इन्साफ़ फ़रमाने वाला ह़ाकिमे मुत़्लक़ है।

(بحر الدموع، ص113)

उ़म्र बदियों में सारी गुज़ारी हाए ! फिर भी नहीं शर्मसारी
बख़्श महबूब का वासित़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
विर्दे लब कलिमए त़य्यिबा हो और ईमान पर ख़ातिमा हो
आ गया हाए ! वक़्ते क़ज़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 137)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आगे क्या भेजा ?

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सुन लो कि बेशक **अल्लाह** पाक का एक फ़िरिश्ता हर दिन और रात में आवाज़ लगाता है कि चालीस साल की उ़म्र वालो ! फ़स्ल काटने का वक़्त आ गया, ऐ पचास साल वालो ! ह़िसाब की तय्यारी कर लो, ऐ साठ साल वालो ! तुम ने आगे क्या भेजा और पीछे क्या

छोड़ा है ? ऐ सत्तर साल वालो ! तुम्हें किस चीज़ का इन्तिज़ार है ? काश कि मख़्लूक़ पैदा न होती और अगर पैदा हो गई तो काश ! अपना मक़्सदे ह़यात जान लेती फिर उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करती, ख़बरदार ! क़ियामत तुम्हारे क़रीब आ गई, होशियार हो जाओ । (حلیۃ الاولیاء، 8/167، رقم:11748 بتغیرٍ)

ऐ मेरे प्यारे प्यारे बुज़ुर्ग इस्लामी भाइयो ! "बुढ़ापा" ह़स्रतो मायूसी के ज़माने का नाम है, कम ही कोई बूढ़ा होगा जो इस उ़म्र में आ कर अपनी पिछली ज़िन्दगी पर न पछताए । नेक होगा तो नेकियों, इ़बादतों, रियाज़तों वग़ैरा में कमी पर अफ़्सोस करेगा और अगर कोई बूढ़ा अब भी गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने में मश्ग़ूल है तो हो सकता है "जैसी निय्यत वैसी मुराद" के मिस्दाक़ वोह ह़सरत करता हो कि काश ! मैं फ़ुलां गुनाह भी कर लेता । معاذ اللہ، اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظُ **अल्लाह** करीम अपनी रिज़ा के मुत़ाबिक़ हमें ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

याद रखिये ! ज़िन्दगी अमानत है, **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से अ़त़ा किये गए जिस्मानी आ'ज़ा भी अमानत हैं, अगर हम ने इन्हें **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इत़ाअ़त (या'नी फ़रमां बरदारी) में इस्ति'माल किया तो बहुत अच्छा वरना कल क़ियामत के दिन येह आ'ज़ा (Body Parts) हमारे आ'माल की गवाही देंगे, जैसा कि **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में पारह 18 सूरए नूर आयत नम्बर 24 में इर्शाद फ़रमाता है :

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इ़रफ़ान : जिस दिन उन के ख़िलाफ़ उन की ज़बानें और उन के हाथ और उन के पाउं उन के आ'माल की गवाही देंगे ।

तुझे पहले बचपन ने बरसों खिलाया जवानी ने फिर तुझ को मज्नूं बनाया
बुढ़ापे ने फिर आ के क्या क्या सताया अजल तेरा कर देगी इक दिन सफ़ाया
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

उ़ज़्र क़बूल नहीं फ़रमाता

सहाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक उस शख़्स के लिये कुछ उ़ज़्र बाक़ी नहीं छोड़ता जिस की उ़म्र मुअख़्ख़र कर दे यहां तक कि वोह साठ (60) साल तक पहुंच जाए।" (بخاری، 4/224، حدیث:6419)

इस ह़दीसे पाक की "फ़त्हुल बारी" में यूं शर्ह़ की गई है : या'नी अब वोह येह उ़ज़्र नहीं कर सकता कि अगर मुझे मोहलत मिलती तो मैं अह़कामे इलाही बजा लाता। जब तमाम उ़म्र में क़ुदरत के बा वुजूद इबादत तर्क करता रहा तो अब इस उ़म्र में इस के पास कोई उ़ज़्र नहीं बचा, अब इसे चाहिये कि इस्तिग़्फ़ार करे। (فتح الباری، 12/202، تحت الحدیث:6419)

बुढ़ापे के बा'द फ़क़त मौत है

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इस इबारत के दो मा'ना है ﴿1﴾ एक येह (कि) आ'ज़र के मा'ना हैं : "उ़ज़्र दूर कर देता है।" तब मत़लब येह होगा कि बचपन और जवानी में ग़फ़्लत का उ़ज़्र सुना जा सकेगा मगर जो बुढ़ापे में **अल्लाह** पाक की त़रफ़ रुजूअ़ न करे उस का उ़ज़्र क़बूल न होगा। क्यूं कि बचपन में जवानी की उम्मीद थी जवानी में बुढ़ापे की, अब बुढ़ापे में सिवा मौत के और किस चीज़ का इन्तिज़ार है ? अगर अब भी इबादत न करे तो सज़ा के क़ाबिल है। इस का कोई बहाना क़ाबिल सुनने के नहीं।

﴾2﴿ दूसरे येह कि आ'ज़र के मा'ना हैं : "मा'ज़ूर रखता है।" या'नी जो बूढ़ा आदमी बुढ़ापे की वज्ह से ज़ियादा इबादत न कर सके मगर जवानी में बड़ी इबादतें करता रहा हो तो **अल्लाह** पाक उसे मा'ज़ूर क़रार दे कर उस के नामए आ'माल में वोही जवानी की इबादत लिखता है। 60 साल पूरा बुढ़ापा है। बूढ़े नौकर की पेन्शन हो जाती है, वोह रऊफ़ो रहीम रब भी अपने बूढ़े बन्दों की पेन्शन कर देता है मगर पेन्शन उस की होती है जो जवानी में ख़िदमत करता रहे।" (मिरआतुल मनाजीह़, 7/89 मुल्तक़त़न)

उ़म्र के चार ह़िस्से

ह़ज़रते अ़ल्लामा ग़ुलाम रसूल रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : अत़िब्बा (या'नी डॉक्टर्ज़) कहते हैं, उ़म्र के चार ह़िस्से हैं : ﴾1﴿ उ़म्र का एक ह़िस्सा बचपन और लड़क पन है, येह तीस (30) बरस तक है ﴾2﴿ उ़म्र का दूसरा ह़िस्सा शबाब (या'नी जवानी) है, येह चालीस (40) बरस तक है ﴾3﴿ उ़म्र का तीसरा ह़िस्सा कहूलत (या'नी अधेड़ पन) है, येह साठ (60) बरस तक है ﴾4﴿ चौथा ह़िस्सा सिने शैख़ूख़त (या'नी बुढ़ापा) है, येह साठ (60) साल के बा'द है। इस में इन्सान की त़ाक़त में कमी आती और कमज़ोरी, बुढ़ापा ज़ाहिर होने लगता है और मौत सर पर मंडलाने लगती है। येह **अल्लाह** पाक की त़रफ़ रुजूअ़ (या'नी तौबा) का वक़्त है। तिरमिज़ी में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरी उम्मत की उ़म्रें साठ (60) और सत्तर (70) सालों के दरमियान हैं।"

बहुत थोड़े लोग इस से ऊपर उ़म्र पाते हैं। अल ह़ासिल इन्सान साठ (60) साल तक क़वी (या'नी मज़बूत़) रहता है इस के बा'द कमज़ोरी और

बुढ़ापा शुरूअ़ हो जाता है। इस उ़म्र में **अल्लाह** पाक उस के तमाम उ़ज़्र ना क़ाबिले क़बूल कर देता है क्यूं कि सिने बुलूग़ से साठ (60) साल तक काफ़ी वक़्त है जिस में वोह सोच बिचार कर सकता है। (तफ़्हीमुल बुख़ारी, 9/703)

ऐ मेरे प्यारे प्यारे बुज़ुर्ग इस्लामी भाइयो ! मुहावरा है : "सुब्ह़ का भूला शाम को वापस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते" अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता बचपन, लड़क पन, जवानी और अधेड़ उ़म्र में **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी वाले काम हो गए हैं तो अब भी मौक़अ़ है इस से फ़ाएदा उठाइये और रह़मो करम फ़रमाने वाले अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** की पाक बारगाह में लौट आइये ! अभी वक़्त है, सांस चल रही है, अभी बहारे दुन्या में ख़ज़ां नहीं आई, आ़म इन्सान की ज़िन्दगी में आने वाले ज़िन्दगी के तमाम अदवार गुज़र चुके। बचपन खेलकूद की नज़्र हो गया, लड़क पन दोस्तों की मंडलियों में गुम हो गया, बे वफ़ा जवानी ख़ूब मस्तियों और ग़फ़्लतों के साथ गुज़र गई और अब क़ब्र के गढ़े में उतरने तक साथ न छोड़ने वाला बा वफ़ा बुढ़ापा है। बूढ़े के लिये सब से बड़ी नसीह़त मौत है, अगर कोई बूढ़ा होने के बा वुजूद ग़फ़्लत की नींद से बेदार न होता हो तो वोह कम अज़ कम इतना ही सोच ले कि वोह अब जल्द दुन्या से जाने वाला है।

गर जहां में सो बरस तू जी भी ले — क़ब्र में तन्हा क़ियामत तक रहे
जब फ़िरिश्ता मौत का छा जाएगा — फिर बचा कोई न तुझ को पाएगा
तेरी त़ाक़त तेरा फ़न औ़हदा तेरा — कुछ न काम आएगा सरमाया तेरा
गोरे नेकां बाग़ होगी ख़ुल्द का — मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा
खिलखिला कर हंस रहा है बे ख़बर ! — क़ब्र में रोएगा चीख़ें मार कर

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी
वक़्ते आख़िर या ख़ुदा ! अ़त्तार को ख़ैर से सरकार का दीदार हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

70 सालह इबादतो रियाज़त

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते मसरूक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इतनी लम्बी नमाज़ अदा फ़रमाते कि उन के पाउं सूज जाया करते थे और येह देख कर उन के घर वालों को उन पर तर्स आता और वोह रोने लगते । एक दिन उन की वालिदा ने कहा : "मेरे बेटे ! तू अपने कमज़ोर जिस्म का ख़याल क्यूं नहीं करता ? इस पर इतनी मशक़्क़त क्यूं लादता है ? तुझे इस पर ज़रा रह़्म नहीं आता ? कुछ देर के लिये तो आराम कर लिया करो, क्या **अल्लाह** पाक ने जहन्नम की आग सिर्फ़ तेरे लिये पैदा की है कि तेरे इ़लावा कोई उस में फेंका नहीं जाएगा ?" उन्हों ने जवाबन अ़र्ज़ की : "अम्मीजान ! इन्सान को हर ह़ाल में कोशिश जारी रखनी चाहिये । प्यारी अम्मीजान ! मेरे तअ़ल्लुक़ से क़ियामत के दिन दो ही बातें होंगी या तो मुझे बख़्श दिया जाएगा या फिर मेरी पकड़ हो जाएगी, अगर मेरी मग़्फ़िरत हो गई तो येह महज़ **अल्लाह** पाक का फ़ज़्लो करम होगा और उस की रह़मत और अगर मैं पकड़ा गया तो यक़ीनन मेरे रब का अ़द्लो इन्साफ़ होगा, लिहाज़ा अब मैं आराम कैसे करूं ? मैं अपने नफ़्स को मारने की पूरी कोशिश करता रहूंगा اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم ।" जब उन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने रोना शुरूअ़ कर दिया । लोगों ने पूछा : "आप ने तो सारी उ़म्र इबादतो रियाज़त में गुज़ारी है, अब क्यूं रो रहे हैं ?" फ़रमाया : मुझ से ज़ियादा किस को रोना चाहिये कि मैं

सत्तर (70) साल तक जिस दरवाज़े को खटखटाता रहा, आज उसे खोल दिया जाएगा लेकिन येह नहीं मा'लूम कि जन्नत का दरवाज़ा खुलता है या दोज़ख़ का...? काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता और मुझे येह मशक़्क़त न देखनी पड़ती । (حکایات الصالحین، ص36 بتغیر)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दाढ़ी मुबारक के सफ़ेद बाल

ह़ज़रते अबू जुह़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस जगह सफ़ेदी देखी है । येह कहते हुए आप ने अपनी बुच्ची (होंट मुबारक और ठोड़ी शरीफ़ के दरमियान वाले बालों) की त़रफ़ इशारा फ़रमाया । (مسلم، ص981، حدیث:2342 ملتقطاً)

आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़ेद बाल

ख़ादिमे नबी ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि "**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब ज़ाहिरी इन्तिक़ाल शरीफ़ फ़रमाया तो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अन्वर और दाढ़ी मुबारक में बीस (20) बाल भी सफ़ेद न थे ।" (بخاری، 2/487، حدیث:3548)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से पूछा गया : "ऐ अबू ह़म्ज़ा (येह ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ की कुन्यत थी) ! प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक तो काफ़ी हो चुकी थी ।" फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक ने अपने महबूब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुढ़ापे का ऐ़ब न लगाया ।" अ़र्ज़ की गई : "क्या येह ऐ़ब है ?" फ़रमाया : "तुम में से हर एक इसे (या'नी बुढ़ापे) को ना पसन्द करता है ।" (قوت القلوب، 2/244)

इतनी मुद्दत तक हो दीदे मुस्ह़फ़े आ़रिज़ नसीब

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ लिखते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर या दाढ़ी शरीफ़ के बाल इतने सफ़ेद न हुए जिन में ख़िज़ाब लगाया जा सकता, सिर्फ़ चन्द बाल सफ़ेद हुए थे । यहां शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया कि सफ़ेद बाल तो बहुत थोड़े थे, कुछ बाल सुर्ख़ हो गए थे या'नी सफ़ेद होने वाले थे, येह है सह़ाबा का इ़श्क़े रसूल कि हुल्या शरीफ़ हू बहू बयान कर दिया । ख़ुदा करे येह हुल्या शरीफ़ क़ब्र में याद रहे कि इस पर वहां की काम्याबी मौक़ूफ़ है । शहन्शाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान ह़सन رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अ़र्ज़ करते हैं :

इतनी मुद्दत तक हो दीदे मुस्ह़फ़े आ़रिज़ नसीब ह़िफ़्ज़ कर लूं नाज़िरा पढ़ पढ़ के क़ुरआने जमाल

(ज़ौक़े ना'त, स. 120)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : दीद : दीदार । **मुस्ह़फ़ :** क़ुरआने करीम । **आ़रिज़ :** चेहरा । **जमाल :** ख़ूब सूरती ।

शर्ह़े कलामे ह़सन : काश ! इतने वक़्त तक हुस्नो जमाले मुस्त़फ़ा देखता रहूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जमाले बा कमाल हर ह़ाल में मेरी निगाहों के सामने रहे ।

नक़्ली बूढ़ा

नक़्ल भी अच्छी होती है, इस तअ़ल्लुक़ से ''मा'दने अख़्लाक़'' ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा 54 पर दिया हुवा एक दिलचस्प वाक़िआ़ अल्फ़ाज़ की कुछ तब्दीली के साथ अ़र्ज़ करता हूं : एक कॉमेडियन (Comedian) ने मरते वक़्त अपने दोस्त को वसिय्यत की, कि ''जब मुझे दफ़्न करने लगो

तो मेरी दाढ़ी और सर के बालों में आटा छिड़क देना।" दोस्त ने कहा : यार ! तुम ज़िन्दगी में तो मज़ाक़ मस्ख़री (Jokes and Jests) करते रहे हो, अब आख़िरी वक़्त में तो इस से बाज़ रहो ! उस ने कहा : अगर तुम वाक़ेई मेरे ख़ैर ख़्वाह हो तो मैं जो कहता हूं वोह कर देना। दोस्त हंस कर राज़ी हो गया और इन्तिक़ाल के बा'द उस ने दफ़्न करते वक़्त उस की दाढ़ी और सर के बालों पर आटा छिड़क दिया। चन्द रोज़ बा'द अपने मर्हूम दोस्त को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? मर्हूम बोला : मुझ से सुवाल हुवा, तुम ने आटा छिड़क्ने की वसिय्यत क्यूं की थी ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! मैं ने तेरे महबूब मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुना था : اِنَّ اللّٰهَ لَيَسْتَحْيِ عَنْ ذِي الشَّيْبَةِ الْمُسْلِمِ "या'नी बिला शुबा **अल्लाह** पाक मुसल्मान के बुढ़ापे से ह़या फ़रमाता है" (معجم اوسط، 4/82، حدیث:5286 ملتقطاً) बूढ़ा होना मेरे इख़्तियार में न था इस लिये सोचा कि लाओ "बुढ़ापे की सूरत" ही बना लूं। तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : जा ! मैं ने तुम्हें बख़्श दिया।

رحمتِ حق بہانہ مے جُوید　　رحمتِ حق بہانہ مے جُوید

या'नी **अल्लाह** पाक की रह़मत क़ीमत नहीं मांगती। **अल्लाह** पाक की रह़मत बहाना चाहती है।

सफ़ेद बाल क़ियामत में नूर होंगे

आज कल उ़मूमन बड़ी उ़म्र के लोग सफ़ेद बालों से कतराते हैं ह़ालां कि मुसल्मान होने की ह़ालत में बुढ़ापे की वज्ह से सफ़ेद बाल आना बड़ी सआ़दत की बात है। फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : सफ़ेद

बालों को न उखाड़ो क्यूं कि येह क़ियामत के दिन नूर होंगे। जिस का एक बाल सफ़ेद हुवा, **अल्लाह** पाक उस के लिये एक नेकी लिखेगा और उस का एक गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा और उस का एक दरजा बुलन्द फ़रमाएगा।

(الترغیب والترہیب، 3/86، حدیث:6)

एक और ह़दीसे पाक में है : مَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي الْاِسْلَامِ كَانَتْ لَهٗ نُوْرًا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ **तरजमा :** जो इस्लाम में बूढ़ा हुवा तो उस के लिये क़ियामत के दिन नूर होगा।

(مشکوۃ المصابیح، 2/37، حدیث:3873)

या'नी जवानी, बुढ़ापा इस्लाम में गुज़रे तो येह नूर ह़ासिल होने का ज़रीआ़ है। मा'लूम हुवा कि पुराना मुसल्मान नए मुसल्मान से इस जिहत (या'नी इस लिहाज़) से अफ़्ज़ल है। इस ह़दीस की बिना पर बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि सर, दाढ़ी से सफ़ेद बाल न उखेड़े कि येह नूर है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/473 ब तग़य्युर)

सफ़ेद बाल उखाड़ने का अ़ज़ाब

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत बुन्याद है : "जो शख़्स जान बूझ कर सफ़ेद बाल उखाड़ेगा, क़ियामत के दिन वोह नेज़ा हो जाएगा जिस से उस को भोंका (या'नी घोंपा) जाएगा।"

(کنز العمال، 3/281، جز:2، رقم:17276)

सब से पहले सफ़ेद बाल किस के आए ?

अल्लाह पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने सब से पहले सफ़ेद बाल देखा, अ़र्ज़ की : ऐ रब ! येह क्या है ? **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम येह वक़ार है।" अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरा वक़ार ज़ियादा कर।

(مؤطا امام مالک، 2/415، حدیث:1756)

सफ़ेद बाल देख कर मौत को याद करने वाला बादशाह

पुराने ज़माने में एक बादशाह ने अपने घर में एक ताबूत रखा हुवा था जिसे देख कर वोह अपनी मौत को याद किया करता था। एक बार सुब्ह़ जब उस ने आईने में अपना चेहरा देखा तो उसे अपनी दाढ़ी में एक सफ़ेद बाल नज़र आया, उस ने कहा कि अब येह मौत की याद दिलाने वाला ताबूत उठा लिया जाए क्यूं कि मेरी दाढ़ी में सफ़ेद बाल आ गया है जो मौत का क़ासिद (या'नी पैग़ाम देने वाला) है लिहाज़ा अब मैं इसी को देख कर मौत को याद कर लिया करूंगा।

काले बालों के बा'द सफ़ेद बालों का आना

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने बेटे से इर्शाद फ़रमाया : काले बालों में सफ़ेद बालों का आ जाना तुझे **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी से मन्अ़ करता है।

(موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 7/562، حدیث:26)

बुढ़ापा आ गया मगर बुराइयां न गईं

एक दफ़्आ़ बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने आईना देखा तो अपने सर और दाढ़ी में सफ़ेद बाल देख कर (बत़ौरे आ़जिज़ी अपने आप से) फ़रमाया : ظَهَرَ الشَّيْبُ وَلَمْ يَذْهَبِ الْعَيْبُ या'नी शैब (बुढ़ापा) तो आ गया मगर ऐ़ब नहीं गए। (مرقاۃ المفاتیح، 7/433، تحت الحدیث:3873)

जा'फ़र बिन मुह़म्मद ख़ुरासानी कहते हैं : एक बूढ़े शख़्स से कहा गया : आप अपनी इस बक़िय्या ज़िन्दगी में किस चीज़ को पसन्द करते हैं ? जवाब दिया : (अपने) गुनाहों पर रोना। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 7/562، حدیث:28)

है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी येह बुढ़ापा भी न होगा, मौत जिस दम आ गई

बीस साल बा'द तौबा

कहा गया है कि बनी इसराईल के एक नौ जवान ने बीस साल तक **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़बादत की फिर इतना ही अ़र्सा ना फ़रमानियों में मुब्तला रहा। एक दिन आईने में दाढ़ी के सफ़ेद बाल देख कर अपनी ना फ़रमानियों पर नादिम हो कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "**या अल्लाह** पाक ! मैं ने 20 साल तक तेरी इ़बादत की फिर 20 साल तेरी ना फ़रमानी की, अगर मैं तेरी त़रफ़ वापस आऊं तो क्या तू मेरी तौबा क़बूल कर लेगा ?" तो उस ने येह ग़ैबी आवाज़ सुनी : "तू ने हम से दोस्ती की तो हम ने भी तुझ से मह़ब्बत की, तू ने हमें छोड़ा तो हम ने भी तुझे छोड़ दिया, तू ने हमारी ना फ़रमानी की तो हम ने तुझे मोहलत दी, अब अगर तू हमारी त़रफ़ आएगा तो हम तुझे क़बूल करेंगे।" (احیاء العلوم، 4/19)

सोने के क़लम से लिखी जाने वाली नसीह़तें

इमाम अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ज़िन्दगी की क़द्रो क़ीमत बयान करते हुए, बुढ़ापे की मन्ज़िल पर मौजूद, सफ़रे आख़िरत के मुसाफ़िरों को नेकियों की सौग़ात साथ लेने की तरग़ीब देते हुए फ़रमाते हैं :

ऐ ज़ादे राह के बिग़ैर सफ़र इख़्तियार करने वाले ! मन्ज़िल बहुत दूर है जब कि तेरी आंख ख़ुश्क और दिल लोहे से ज़ियादा सख़्त है, जब कि तू हर आने वाले दिन में गुनाहों के समुन्दर में ग़र्क़ रहता है तो मुसीबत का तुझ से ज़ियादा ह़क़दार कौन होगा ? अफ़्सोस ! जवानी तुझे बेदार न कर सकी और न ही बुढ़ापा तुझे डरा सका, ह़द तो येह है कि तेरे बालों की सफ़ेदी भी तुझे गुनाहों से बाज़ न रख सकी, मुझे तेरी काम्याबी बहुत

मुश्किल नज़र आ रही है, फ़िक्रे आख़िरत करने वालों को देख ! कि वोह कहां पहुंच गए ! वोह आराम देह बिस्तर को लपेट कर **अल्लाह** पाक की बारगाह में रोने और आख़िरत की तय्यारी करने में लग गए, उन के रुख़्सारों पर बहने वाले आंसूओं ने निशानात डाल दिये हैं। (بحرالدموع،ص147)

ऐ मेरे भाई ! तू ने अपनी ज़िन्दगी खेलकूद में गंवा दी जब कि दूसरे लोग मक़्सूद को पा गए और तू उन से पीछे रह गया, क्या तू ने कभी सुना है कि (मरने के बा'द) फुलां लौट आया और उस ने तौबा कर ली।

ऐ वोह शख़्स जिस के पास ख़ुश बख़्ती का वक़्त मौजूद है ! तू नफ़्सानी ख़्वाहिशात के जाल से कब छुटकारा पाएगा और कब अपने इज़्ज़त वाले, ख़ूबियों वाले मौला की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा ? ऐ मिस्कीन ! काश तू तौबा करने वालों के ग़म को देख लेता और ख़ौफ़ रखने वालों की वईद की होलनाकी से होने वाली बे क़रारी को देख लेता जिन्हों ने अपनी आंखों की ठन्डक को नमाज़, ज़कात और दुन्या से बे रग़बती में रखा, जब कि बद बख़्तों ने अपनी जवानियां ग़फ़्लत में और बुढ़ापे ह़िर्स और लम्बी उम्मीदों में बरबाद कर दिये, तू ने न तो अपनी जवानी से नफ़्अ़ उठाया और न अपने बुढ़ापे ही में रुजूअ़ किया, ऐ अपनी जवानी और बुढ़ापा बरबाद कर देने वाले.....

बुढ़ापे ने तुझे मौत की वाज़ेह़ ख़बर दे दी है। ऐ ज़िन्दगी के मुसाफ़िर ! तू ह़द से गुज़र चुका है, अपनी आज़्माइश पर आंसू बहा, कहीं ऐसा न हो कि तुझे धुत्कार दिया जाए, ऐ वोह शख़्स ! जिस की अक्सर उ़म्र गुज़र गई और गुज़रा हुवा वक़्त लौट नहीं सकता, नसीह़तों ने तेरी रहनुमाई की और बुढ़ापे ने तुझे ख़बरदार कर दिया कि मौत क़रीब है और ज़बाने ह़ाल से पुकार पुकार कर कह रही है :

يَاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ ﴿٦﴾
(پ30، الانشقاق:6)

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ इन्सान ! बेशक तू अपने रब की त़रफ़ दौड़ने वाला है फिर उस से मिलने वाला है। (بحرالدموع،ص147،152 ملتقطاً)

मेरे प्यारे प्यारे बुज़ुर्ग इस्लामी भाइयो ! येह बुढ़ापा बिल ख़ुसूस तौबा व इस्तिग़्फ़ार करने और गुनाहों से बाज़ आ जाने का वक़्त है, एक रिवायत में है कि "जिस की ज़िन्दगी के चालीस साल गुज़र गए और उस की भलाई उस की बुराई पर ग़ालिब नहीं आई तो उसे चाहिये कि वोह जहन्नम के लिये तय्यार हो जाए।" (تنزیہ الشریعۃ المرفوعۃ، 1/205، رقم:68)

अगर मुजाहदे की मशक़्क़त न होती तो लोगों को "बा कमाल मर्द" का नाम न दिया जाता। ऐ मुर्दा दिल ! अगर तू जवानी में नेकियों की त़रफ़ माइल न हो सका तो अधेड़ पन ही में माइल हो जा, क्यूं कि सर सफ़ेद हो जाने के बा'द खेलकूद बे सूद है और बुढ़ापे में ना फ़रमानी ज़ियादा बुरी है, जब तुझ से कहा जाएगा कि "तू ने जवानी को ग़फ़्लत में ज़ाएअ़ कर दिया और अब बुढ़ापे में (नेक) आ'माल की कमी पर रोता है", अगर तू जान लेता कि तेरे लिये कौन सा अ़ज़ाब तय्यार हो चुका है तो तू सारी रात रोने में गुज़ार देता।

बुढ़ापे की घन्टी दुन्या से कूच का ए'लान कर रही है, ऐ शख़्स ! आख़िरत की तय्यारी कर ले, कब तक उ़ज़्र करता रहेगा ? कब तक सुस्ती करेगा ? कितनी ग़फ़्लत करेगा ? मैं क़ियामत के दिन तुझे मा'ज़ूर नहीं

पाता, तेरे मिलने का घर वीरान है जब कि जुदाई का घर आबाद है, क़दम बढ़ा ! शायद तौबा से कोताहियों का इज़ाला हो जाए और गुनाहों से मुआ़फ़ी मिल जाए और सह़री के वक़्त एक सज्दा ऐसा कर ले जो तुझे क़ियामत की होलनाकियों से नजात दिलाए ।

ऐ तौबा करने वालो ! आओ हम अपने गुनाहों पर रो लें, येह रोने का मक़ाम है । ऐ तौबा में टाल मटोल करते हुए बुढ़ापे की दहलीज़ में दाख़िल होने वाले ! ऐ अपनी जवानी को ग़फ़्लत में गंवाने वाले ! ऐ अपनी बद अ़मली की वज्ह से बारगाहे ख़ुदावन्दी से धुत्कार दिये जाने वाले ! तू जवानी में ग़ाफ़िल रहा, अगर बुढ़ापे में भी यूंही तौबा से मह़रूम रहा तो कब बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर होगा ? येह दोस्तों का त़रीक़ा तो नहीं, तेरा ज़ाहिर तो आबाद है मगर अफ़्सोस ! तेरा बात़िन बरबादो वीरान है, कितनी ना फ़रमानियां तू कर चुका जिन के सबब तेरे और **अल्लाह** पाक के दरमियान पर्दे रुकावट बन चुके हैं ।

तू ने अपनी ज़िन्दगी के बेहतरीन अय्याम गुनाहों में गुज़ार दिये । आख़िर इस्लाह़ की त़रफ़ कब आएगा ? अगर तू अपनी गुज़श्ता उ़म्र में नेकियों को आगे भेजता तो तेरा ह़िसाब हलका हो जाता, अब येह कैसे हलका होगा जब कि तू ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत और दुन्या का माल जम्अ़ करने में गुज़ार दी । जब बुढ़ापे ने मौत से डराया और तू ने ज़ादे राह आगे न भेजा तो तू क्या जवाब देगा ? काश ! कोई मुझे समझा देता कि गुनहगारों को अपनी ज़िन्दगी आख़िर अच्छी क्यूं लगती है ।

चन्द अ़रबी अश्आ़र का तरजमा

जब मिलने और राज़ी होने का ज़माना गुज़र गया तो तू गुज़रे हुए मुआ़मले को लौटाने का मुत़ालबा करने लगा, तू क्यूं न आया ह़ालां कि तुझ से मुलाक़ात का वक़्त मौजूद था और तेरे बुढ़ापे की सफ़ेदी, दांतों (की सफ़ेदी) से ज़ियादा चमकदार थी। (بحرالدموع،ص49)

हुई जाती है हाए उ़म्र ज़ाएअ़ जानता हूं मैं
नहीं आएगा हरगिज़ वक़्त गुज़रा या रसूलल्लाह
निकलने वाली है अब रूहे मुज़्त़र जिस्म से जानां
करम ! ईमां को है शैत़ां से ख़त़रा या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 346)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला